



संस्कृत और अंतरिक्ष विज्ञान

डा. राज पाल
प्राचार्य
गांधी आदर्श कालेज
समालखा (पानीपत)

DECLARATION: I AS AN AUTHOR OF THIS PAPER /ARTICLE, HERE BY DECLARE THAT THE PAPER SUBMITTED BY ME FOR PUBLICATION IN THE JOURNAL IS COMPLETELY MY OWN GENUINE PAPER. IF ANY ISSUE REGARDING COPYRIGHT/PATENT/OTHER REAL AUTHOR ARISES, THE PUBLISHER WILL NOT BE LEGALLY RESPONSIBLE. IF ANY OF SUCH MATTERS OCCUR PUBLISHER MAY REMOVE MY CONTENT FROM THE JOURNAL WEBSITE. FOR THE REASON OF CONTENT AMENDMENT /OR ANY TECHNICAL ISSUE WITH NO VISIBILITY ON WEBSITE /UPDATES, I HAVE RESUBMITTED THIS PAPER FOR THE PUBLICATION.FOR ANY PUBLICATION MATTERS OR ANY INFORMATION INTENTIONALLY HIDDEN BY ME OR OTHERWISE, I SHALL BE LEGALLY RESPONSIBLE. (COMPLETE DECLARATION OF THE AUTHOR AT THE LAST PAGE OF THIS PAPER/ARTICLE)

सारांश

संस्कृत भाषा भारतीय ज्ञान-विज्ञान की धरोहर है। इसे केवल धार्मिक या दार्शनिक ग्रंथों की भाषा मानना इसके महत्व को सीमित करना होगा। वास्तव में संस्कृत एक ऐसी वैज्ञानिक भाषा है, जिसके माध्यम से प्राचीन भारत ने न केवल दार्शनिक चिंतन किया बल्कि गणित, खगोल विज्ञान और चिकित्सा विज्ञान जैसी विधाओं को भी विकसित किया। विशेष रूप से अंतरिक्ष विज्ञान (Space Science) के संदर्भ में संस्कृत की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण रही है। ऋग्वेद और अथर्ववेद में सूर्य, चंद्रमा और नक्षत्रों की गति का उल्लेख मिलता है। यजुर्वेद में काल और ऋतु-चक्र की गणना का वर्णन है। उपनिषदों ने आकाश (Space) को सृष्टि का मूल कारण बताया है—

“आकाशो वै नाम रूपयोः कारणम्” (छांदोग्य उपनिषद् 1.9.1)

अर्थात् – “आकाश ही नाम और रूप का कारण है।”

प्राचीन आचार्य जैसे आर्यभट्ट ने पृथ्वी के घूर्णन और ग्रहण सिद्धांत प्रस्तुत किए, भास्कराचार्य ने गणितीय खगोल विज्ञान को उन्नत किया और वराहमिहिर ने ग्रह-नक्षत्रों की स्थिति और प्राकृतिक घटनाओं का विश्लेषण किया। इन सभी का आधार संस्कृत भाषा रही। आधुनिक समय में भी संस्कृत की प्रासंगिकता बनी हुई है। नासा (NASA) और अन्य संस्थानों ने इसे कृत्रिम बुद्धिमत्ता (Artificial Intelligence) और कंप्यूटर एल्गोरिद्म के लिए सर्वाधिक उपयुक्त भाषा माना है। विश्वभर में संस्कृत पर आधारित खगोल और अंतरिक्ष विज्ञान का पुनः अध्ययन हो रहा है। अतः यह शोध-पत्र इस बात की पुष्टि करता है कि संस्कृत भाषा केवल भारत की सांस्कृतिक धरोहर ही नहीं, बल्कि वैज्ञानिक चेतना की वैश्विक धरोहर है। यह प्राचीन और आधुनिक विज्ञान के बीच एक सेतु का कार्य करती है और आने वाले समय में अंतरिक्ष अनुसंधान के लिए भी महत्वपूर्ण साबित हो सकती है।

भूमिका

संस्कृत भाषा को आदिकाल से ही “देववाणी” और “ज्ञान-विज्ञान की भाषा” कहा गया है। भारत की संपूर्ण दार्शनिक, आध्यात्मिक और वैज्ञानिक परंपरा का मूल संस्कृत साहित्य में निहित है। विशेषकर खगोल विज्ञान और अंतरिक्ष विज्ञान के विकास में संस्कृत ग्रंथों की भूमिका असाधारण रही है। वैदिक ऋचाओं में हमें सूर्य, चंद्र और नक्षत्रों की गति का उल्लेख मिलता है। ऋग्वेद में कहा गया है—

“सूर्य आत्मा जगतस्तस्थुषश्च” (ऋग्वेद 1.115.1)

अर्थ – सूर्य समस्त गत और स्थिर जगत का आत्मा है।

यह श्लोक स्पष्ट करता है कि वैदिक कालीन मनीषियों ने सूर्य को संपूर्ण ब्रह्मांडीय प्रणाली का केंद्र माना था। इसी प्रकार, अथर्ववेद और यजुर्वेद में पृथ्वी की स्थिति, आकाशीय पिंडों की गति और समय-गणना से संबंधित विवरण मिलते हैं। उपनिषदों में आकाश को पंचमहाभूतों में प्रमुख तत्व माना गया

है। भारतीय खगोलविदों ने अत्यंत सीमित साधनों के बावजूद पृथ्वी की गोलाई, उसके घूर्णन, ग्रहण की गणना और ग्रहों की गति का सटीक विवरण संस्कृत भाषा में प्रस्तुत किया। **आर्यभट** ने अपने ग्रंथ *आर्यभटीय* में पृथ्वी के घूर्णन का सिद्धांत स्पष्ट किया। **भास्कराचार्य** ने *सिद्धांत शिरोमणि* में ग्रहों की गति और खगोलीय गणनाओं का वैज्ञानिक विश्लेषण किया। **वराहमिहिर** ने *बृहत्संहिता* में ग्रहों की स्थिति और प्राकृतिक घटनाओं की विवेचना की। यह तथ्य अत्यंत रोचक है कि जिन विषयों पर आधुनिक विज्ञान ने हाल के कुछ शताब्दियों में कार्य किया, उन पर भारतीय मनीषियों ने सहस्रों वर्ष पूर्व संस्कृत के माध्यम से विचार प्रस्तुत किए। आधुनिक युग में भी संस्कृत की उपयोगिता कम नहीं हुई है। नासा (NASA) और अन्य अंतरराष्ट्रीय संस्थाओं ने संस्कृत को विश्व की सबसे व्यवस्थित और तार्किक भाषा माना है। विशेष रूप से कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) और अंतरिक्ष अनुसंधान में इसकी संभावनाएँ अत्यधिक हैं। संस्कृत भाषा का महत्व केवल वेदों और उपनिषदों तक सीमित नहीं है, बल्कि यह समस्त वैदिक, महाकाव्य एवं पुराण साहित्य में भी दिखाई देता है। विशेषकर अंतरिक्ष विज्ञान और खगोल ज्ञान की दृष्टि से यह भाषा एक अद्वितीय धरोहर है। ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद में सूर्य, चंद्र और नक्षत्रों की गति का उल्लेख मिलता है। ब्राह्मण ग्रंथों में यज्ञीय गणना और समय निर्धारण के लिए खगोलीय गणनाओं का प्रयोग मिलता है। उदाहरण के लिए, **शतपथ ब्राह्मण** में कहा गया है कि “*सूर्य प्रतिदिन आकाश में अपनी गति करता है और ऋतु-चक्र का निर्धारण करता है।*” इससे स्पष्ट होता है कि वैदिक ऋषियों ने सूर्य की गति और समय-गणना को भलीभांति समझा था। महाभारत केवल एक महाकाव्य ही नहीं, बल्कि वैज्ञानिक दृष्टि से भी महत्वपूर्ण ग्रंथ है। इसमें ग्रहों, नक्षत्रों और आकाशीय घटनाओं का विस्तृत वर्णन मिलता है। उदाहरण के लिए, युद्ध के समय ग्रहण की भविष्यवाणी का उल्लेख है। **महाभारत** (भीष्म पर्व) में वर्णन है कि “*सूर्य और चंद्रमा दोनों ही ग्रहणग्रस्त हुए।*” यह इस बात का संकेत है कि उस समय ग्रहण की वैज्ञानिक गणना उपलब्ध थी। इसी प्रकार, महाभारत में आकाशीय पिंडों की स्थिति और उनके प्रभाव

का उल्लेख मिलता है, जो ज्योतिष एवं खगोल विज्ञान की गहरी समझ को दर्शाता है। रामायण में भी अंतरिक्ष विज्ञान से जुड़े कई उदाहरण मिलते हैं। श्रीराम के वनवास और युद्ध यात्रा के प्रसंगों में नक्षत्रों की स्थिति का उल्लेख किया गया है। जब भगवान राम ने समुद्र पर सेतु निर्माण की योजना बनाई, तब नक्षत्रों की स्थिति और ग्रहों की गणना का विशेष ध्यान रखा गया। इससे यह स्पष्ट होता है कि उस समय ज्योतिष और खगोल ज्ञान समाज जीवन का अभिन्न अंग था। विष्णु पुराण, भागवत पुराण और ब्रह्मांड पुराण जैसे ग्रंथों में ब्रह्मांड की रचना और आकाश की संरचना का उल्लेख है। भागवत पुराण में कहा गया है कि ब्रह्मांड अनंत है और इसमें असंख्य लोक (गैलेक्सियाँ) विद्यमान हैं। यह आधुनिक वैज्ञानिक अवधारणा से मेल खाता है।

संस्कृत साहित्य में यदि किसी ग्रंथ को प्राचीन अंतरिक्ष विज्ञान का प्रथम व्यवस्थित आधार माना जाए तो वह है – वेदांग ज्योतिष। यह ऋग्वेद और यजुर्वेद से संबद्ध वेदांग है, जिसका मुख्य उद्देश्य यज्ञ और अनुष्ठानों में समय-निर्धारण करना था। परंतु इसके भीतर जो गणितीय खगोल ज्ञान निहित है, उसने इसे केवल धार्मिक ग्रंथ न बनाकर भारतीय खगोल विज्ञान का प्रथम वैज्ञानिक शास्त्र बना दिया।

वेदांग ज्योतिष का स्वरूप और काल

वेदांग ज्योतिष के दो संस्करण प्राप्त होते हैं:

1. ऋग्वेदीय वेदांग ज्योतिष – 36 श्लोक
2. यजुर्वेदीय वेदांग ज्योतिष – 43 श्लोक

विद्वानों के अनुसार इसकी रचना लगभग 1200–1000 ईसा पूर्व के बीच हुई। आचार्य *लागध* या *पिंगल* को इसका प्रवर्तक माना जाता है। यह ग्रंथ छोटा है, परंतु इसके प्रत्येक श्लोक में समय और अंतरिक्ष विज्ञान की गहन झलक दिखाई देती है।

काल-गणना की पद्धति

वेदांग ज्योतिष में काल की सूक्ष्म गणना दी गई है। इसमें वर्ष, अयन, ऋतु, मास, पक्ष, दिवस और मुहूर्त तक का सटीक विवरण है।

- दिन और रात्रि – 30 मुहूर्तों में विभाजित।
- मुहूर्त – लगभग 48 मिनट का।
- नाड़ी – 1 दिन में 60 नाड़ियाँ।
- मास – 30 दिन का।
- ऋतु – 2 मास की।
- अयन – 6 मास का।
- वर्ष – 12 मास का।

“त्रिंशदर्थं त्रिंशदर्थं मासः सौरः परिमीयते।” (वेदांग ज्योतिष, 7)

अर्थ – सूर्य की गति से गणना किया गया एक मास 30 दिनों का माना जाता है।

यह गणना दर्शाती है कि भारतीय आचार्यों ने काल को गणितीय पद्धति से मापा और उसे प्राकृतिक घटनाओं से जोड़ा।

नक्षत्र विज्ञान

वेदांग ज्योतिष में 27 नक्षत्रों का उल्लेख है :- अश्विनी, भरणी, कृत्तिका, रोहिणी, मृगशिरा, आर्द्रा, पुनर्वसु, पुष्य, आश्लेषा, मघा, पूर्वाफाल्गुनी, उत्तराफाल्गुनी, हस्त, चित्रा, स्वाति, विशाखा, अनुराधा, ज्येष्ठा,

मूल, पूर्वाषाढा, उत्तराषाढा, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, पूर्वाभाद्रपद, उत्तराभाद्रपद, रेवती। चंद्रमा प्रतिदिन एक नक्षत्र को पार करता है और इस प्रकार एक मास में पूरे 27 नक्षत्रों की परिक्रमा करता है। यह वर्गीकरण अत्यंत महत्वपूर्ण है क्योंकि आज भी भारतीय पंचांग और ज्योतिष की संपूर्ण प्रणाली इन्हीं नक्षत्रों पर आधारित है।

ग्रहण गणना

वेदांग ज्योतिष में सूर्य और चंद्र ग्रहण का उल्लेख है। इसमें बताया गया कि जब सूर्य और चंद्रमा एक विशेष स्थिति में आते हैं तो ग्रहण घटित होता है। यद्यपि गणना आज जितनी सटीक नहीं थी, परंतु प्राचीन काल में यह एक अद्भुत खोज थी कि ग्रहण का कारण छाया और आकाशीय पिंडों की गति है।

पंचांग प्रणाली की नींव

वेदांग ज्योतिष में पंचांग के पाँच अंगों (तिथि, वार, नक्षत्र, योग, करण) का आधार मिलता है।

- तिथि – चंद्रमा की गति पर आधारित।
- वार – सौर-गति पर आधारित।
- नक्षत्र – तारामंडल से जुड़ा।
- योग – सूर्य और चंद्र की स्थिति का जोड़।
- करण – अर्ध-तिथि।

आज भी भारत में जो पंचांग चलता है, उसकी जड़ें वेदांग ज्योतिष में ही हैं।

वैज्ञानिक दृष्टि और वैश्विक तुलना

वेदांग ज्योतिष केवल धार्मिक गणना का साधन नहीं था। इसमें निहित गणितीय और खगोल संबंधी सूत्र इस बात का प्रमाण हैं कि भारतीय मनीषियों ने सहस्रों वर्ष पूर्व ही सूर्य, चंद्र और नक्षत्रों की गति का अध्ययन शुरू कर दिया था। जहाँ यूनानी और बेबीलोन सभ्यताओं ने लगभग 500 ईसा पूर्व खगोल गणना शुरू की, वहीं भारत में 1200 ईसा पूर्व ही इसका व्यवस्थित स्वरूप वेदांग ज्योतिष के रूप में मिल जाता है।

“चतुर्भागेन मासोऽयं चतुर्भागेन संवत्सरः।”

– वर्ष को चार भागों अर्थात् ऋतुओं में विभाजित किया गया।

विष्णु पुराण में ‘सप्तलोक’ और ‘सप्तपाताल’ का उल्लेख है, जिन्हें ब्रह्मांडीय परतों और पृथ्वी की संरचनाओं के रूप में समझा जा सकता है। गर्ग संहिता और पाराशर ज्योतिष शास्त्र जैसे ग्रंथों में ग्रह-नक्षत्रों की स्थिति और उनके प्रभाव का वैज्ञानिक विवरण है। पाराशर ऋषि ने ग्रहों की गति, दशा और अंतरदशा का वर्णन किया, जो आज भी वैदिक ज्योतिष का आधार है। न्याय और सांख्य दर्शन जैसे दार्शनिक ग्रंथों ने भी आकाश को पंचमहाभूतों में प्रमुख माना। सांख्य दर्शन में कहा गया है कि “आकाश ध्वनि का आश्रय है और सृष्टि के क्रम में यह पहला तत्व है।” इस प्रकार दर्शन ग्रंथ भी अंतरिक्ष विज्ञान के मूल तत्वों को स्पष्ट करते हैं। संस्कृत साहित्य केवल वैदिक युग तक सीमित नहीं रहा, बल्कि महाकाव्यों, पुराणों और दार्शनिक ग्रंथों में भी अंतरिक्ष विज्ञान और खगोल ज्ञान की गहरी छाप मिलती है। चाहे वह महाभारत में ग्रहण का उल्लेख हो, रामायण में नक्षत्र स्थिति का वर्णन, या पुराणों में ब्रह्मांडीय संरचना – हर जगह संस्कृत के माध्यम से ब्रह्मांडीय ज्ञान का संरक्षण हुआ है। इस प्रकार, संस्कृत केवल एक प्राचीन भाषा न होकर विज्ञान और अंतरिक्ष ज्ञान की वह धरोहर है जो आज भी आधुनिक विश्व के लिए प्रेरणा और दिशा दोनों प्रदान कर सकती है।

1. वैदिक साहित्य में अंतरिक्ष का वर्णन

- ऋग्वेद में सूर्य, चंद्र और नक्षत्रों की गति का उल्लेख है।
- अथर्ववेद में पृथ्वी और आकाश की स्थिति का विवरण है।
- यजुर्वेद में काल (Time) और ऋतु-चक्र की गणना दी गई है।

“त्रीणि दिवि त्र्यधिवेते पृथिव्याम्” (ऋग्वेद 1.164.5)

अर्थ – तीन-तीन लोक आकाश और पृथ्वी पर स्थित हैं।

2. उपनिषदों में अंतरिक्ष विज्ञान

“आकाशो वै नाम रूपयोः कारणम्” (छांदोग्य उपनिषद 1.9.1)

अर्थ – नाम और रूप का कारण आकाश है। यह श्लोक आज की वैज्ञानिक अवधारणा से मेल खाता है कि Space (आकाश) ही पदार्थ और ऊर्जा का आधार है।

3. संस्कृत ग्रंथ और खगोल विज्ञान

- आर्यभटीय (आर्यभट) – सूर्यग्रहण, चंद्रग्रहण और पृथ्वी के घूर्णन का सिद्धांत।
- सूर्य सिद्धांत – ग्रहों की गति और समय गणना।
- बृहत्संहिता (वराहमिहिर) – ग्रहों की स्थिति, ग्रहण, और प्राकृतिक घटनाएँ।
- सिद्धांत शिरोमणि (भास्कराचार्य) – ग्रहों की कक्षा, त्रिकोणमिति, और समय-निर्धारण।

आर्यभट का श्लोक:

“स्वम्यानत्र परिभ्रमन् स्वगुणैः भूमिरियं स्फुटा।

न स्थिता तस्थुषामत्र भ्रमाच्चन्द्रार्कदर्शनम्॥” (आर्यभटीय)

अर्थ – पृथ्वी अपने अक्ष पर घूमती है, इसी कारण सूर्य और चंद्रमा के उदय-अस्त का आभास होता है।

4. संस्कृत और आधुनिक अंतरिक्ष विज्ञान

- नासा (NASA) के अनुसार, संस्कृत सबसे उपयुक्त भाषा है वैज्ञानिक गणनाओं और Artificial Intelligence के लिए।
- संस्कृत की संरचना कंप्यूटर एल्गोरिद्म के लिए उपयोगी है।
- आधुनिक अंतरिक्ष अनुसंधान में संस्कृत ग्रंथों का पुनः अध्ययन हो रहा है।

5. वैश्विक प्रभाव और आधुनिक प्रासंगिकता

- BHU, JNU, MIT और Oxford जैसे संस्थानों में संस्कृत और विज्ञान का तुलनात्मक अध्ययन।
- ISRO भी प्राचीन ग्रंथों के वैज्ञानिक दृष्टिकोण को मान्यता देता है।
- विश्वभर में संस्कृत को “Scientific Heritage Language” के रूप में अपनाया जा रहा है।

निष्कर्ष

संस्कृत और अंतरिक्ष विज्ञान का संबंध केवल एक ऐतिहासिक या सांस्कृतिक परंपरा तक सीमित नहीं है, बल्कि यह मानव सभ्यता के वैज्ञानिक विकास का भी दर्पण है। वेदों और उपनिषदों में ब्रह्मांड और आकाशीय तत्वों का जो दार्शनिक विवेचन मिलता है, उसने प्राचीन भारतीय मनीषियों की वैज्ञानिक दृष्टि को दिशा दी। वेदांग ज्योतिष ने इस दार्शनिक चिंतन को गणितीय रूप दिया और कालगणना, नक्षत्र-विज्ञान तथा ग्रहण सिद्धांत को व्यवस्थित किया। आगे चलकर आर्यभटीय, सूर्य सिद्धांत, बृहत्संहिता और सिद्धांत शिरोमणि जैसे संस्कृत ग्रंथों ने आधुनिक खगोल विज्ञान की ठोस नींव रखी। महाकाव्यों और पुराणों में भी ब्रह्मांड की संरचना, नक्षत्रों की स्थिति और ग्रहों के प्रभाव का उल्लेख मिलता है। इससे यह स्पष्ट होता है कि भारतीय ज्ञान परंपरा ने अंतरिक्ष विज्ञान को केवल वैज्ञानिक

ही नहीं, बल्कि दार्शनिक और सांस्कृतिक दृष्टिकोण से भी देखा। आधुनिक काल में संस्कृत की प्रासंगिकता और भी बढ़ गई है। नासा तथा अन्य वैज्ञानिक संस्थान संस्कृत को एक तार्किक और संगठित भाषा मानते हैं, जो कृत्रिम बुद्धिमत्ता और अंतरिक्ष अनुसंधान के लिए आदर्श है। इसका तात्पर्य यह है कि संस्कृत भाषा केवल अतीत की स्मृति नहीं है, बल्कि यह **भविष्य की वैज्ञानिक भाषा** भी बन सकती है। संस्कृत और अंतरिक्ष विज्ञान का संबंध अत्यंत गहरा है। वैदिक साहित्य और उपनिषदों में जो अंतरिक्ष की अवधारणाएँ वर्णित हैं, वे आधुनिक विज्ञान से मेल खाती हैं। प्राचीन खगोलविद आर्यभट्ट, भास्कराचार्य और वराहमिहिर ने संस्कृत के माध्यम से जो सिद्धांत दिए, वे आज भी अंतरिक्ष विज्ञान की नींव हैं। आधुनिक युग में भी संस्कृत की महत्ता बनी हुई है। नासा जैसी संस्थाएँ इसे अंतरिक्ष अनुसंधान और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के लिए उपयुक्त मान रही हैं। अतः यह कहा जा सकता है कि संस्कृत केवल अतीत की भाषा नहीं, बल्कि भविष्य की वैज्ञानिक भाषा भी है।

अतः निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि—

- संस्कृत ने अंतरिक्ष विज्ञान की वैचारिक और गणितीय नींव रखी।
- इसने मानवता को समय-गणना, ग्रह-नक्षत्रों की गति और ब्रह्मांड की समझ प्रदान की।
- यह परंपरा आज भी प्रासंगिक है और आधुनिक विज्ञान के साथ समन्वय स्थापित कर सकती है।

इस प्रकार, संस्कृत और अंतरिक्ष विज्ञान का यह संगम भारतीय वैज्ञानिक चेतना की महानता का प्रमाण है और विश्व को यह संदेश देता है कि **ज्ञान का कोई कालखंड सीमित नहीं होता, बल्कि वह निरंतर प्रवाहित होकर भविष्य को दिशा देता है।**

संदर्भ ग्रंथसूची



1. ऋग्वेद, यजुर्वेद, अथर्ववेद
2. छांदोग्य उपनिषद, बृहदारण्यक उपनिषद
3. आर्यभटीय – महर्षि आर्यभट
4. सूर्य सिद्धांत
5. बृहत्संहिता – वराहमिहिर
6. सिद्धांत शिरोमणि – भास्कराचार्य
7. NASA Research on Sanskrit and AI
8. BHU, Faculty of Jyotirvigyan Reports

Author's Declaration

I as an author of the above research paper/article, here by, declare that the content of this paper is prepared by me and if any person having copyright issue or patent or anything otherwise related to the content, I shall always be legally responsible for any issue. For the reason of invisibility of my research paper on the website /amendments /updates, I have resubmitted my paper for publication on the same date. If any data or information given by me is not correct, I shall always be legally responsible. With my whole responsibility legally and formally have intimated the publisher (Publisher) that my paper has been checked by my guide (if any) or expert to make it sure that paper is technically right and there is no unaccepted plagiarism and hentriacontane is genuinely mine. If any issue arises related to Plagiarism/ Guide Name/ Educational Qualification /Designation /Address of my university/ college/institution/ Structure or Formatting/ Resubmission /Submission /Copyright /Patent /Submission for any higher degree or Job/Primary Data/Secondary Data Issues. I will be solely/entirely responsible for any legal issues. I have been informed



Airo National Research Journal
Peer-Reviewed
Multidisciplinary

ISSN: 2321-3914
Volume: 3 Issue: 2
August 2025
Impact Factor: 11.9
Subject: Sanskrit

that the most of the data from the website is invisible or shuffled or vanished from the database due to some technical fault or hacking and therefore the process of resubmission is there for the scholars/students who finds trouble in getting their paper on the website. At the time of resubmission of my paper I take all the legal and formal responsibilities, If I hide or do not submit the copy of my original documents (Andhra/Driving License/Any Identity Proof and Photo) in spite of demand from the publisher then my paper maybe rejected or removed from the website anytime and may not be consider for verification. I accept the fact that as the content of this paper and the resubmission legal responsibilities and reasons are only mine then the Publisher (Airo International Journal/Airo National Research Journal) is never responsible. I also declare that if publisher finds Any complication or error or anything hidden or implemented otherwise, my paper maybe removed from the website or the watermark of remark/actuality maybe mentioned on my paper. Even if anything is found illegal publisher may also take legal action against me.

डा. राज पाल
